।। श्री मुनिसुव्रतनाथ जिन पूजन ।।

रचियता – राजेश कासलीवाल, उज्जैन

स्थापना

(छंद रोला)

सम्यक रत्नत्रय धर भायी षोडश भावन ।
सर्व हितंकर पाया पद तीर्थंकर पावन ।
धर्म देशना धर्म चक्र का किया प्रवर्तन ।
हुआ अहो जयवंत जगत में श्री जिन शासन ।

(दोहा)

मन-वच-तन से पूजता, करुं चरण नित सेव ।
आओ तिष्ठो निकट रहो, मुनिसुव्रत जिनदेव ।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्ननाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् परि पुष्पांजलि क्षिपेत ।

(छंद लक्ष्मीधरा)

जन्म-मरण रोग का मोहमल हेतु है ।
भव-भव में भ्रमण महा दुख देतु है ।
आपका नाम जाप जल सम मलहर ।
नीर निर्मल भेंट देव निर्मलकर ।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भवाताप नाश जिन आप शीतल हुए ।
परिणाम प्रभु मम दग्ध पल पल हुए ।
आपकी शरण हूँ शांत चित्त को करो ।
भेंट मलयज प्रभो ताप मेरा हरो ।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

मान जान आतमा आत्म में लीन हो ।
द्रव्य-भाव-परिणाम आप अक्षीण हो ।
पद अक्षय लहूं आप सम ही प्रभो ।
अर्चता अक्षतों से चरण हे विभो ।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय-अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

परभाव त्याग आप ब्रह्मभाव में रमे ।
काम के विषाद विष सर्व भाव को वमे ।
हे जिनेश ! त्रस्त मैं पुष्पराज मार से ।
पुष्प से अर्चना आप मम उर बसे ।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्ण है आतमा पूर्ण परिणाम हो ।
अन्य ना इच्छते आप गुणधाम हो ।
आपको लक्ष्य ले सर्व इच्छा तजूं ।
हाथ नैवेद्य ले आपको नित भजूं ।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्म तल्लीन हो ज्ञान है ज्ञान में ।
तीन लोक दीप्त है आप ज्ञानभान में ।
नित्य दीप्त ज्ञानज्योत अंध मैं मोह में ।
अर्चता दीप से मोह नाश हेत मैं ।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्यान की वन्हि में भावकर्म को दहे ।
पूर्ण परिशुद्ध हो ज्ञान गंध को लहे ।
मैं विभाव की कुवास ग्रस्त हूँ हे प्रभो ।
पूजता धूप से कर्म नष्ट हो विभो ।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय-अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आत्म साधना मोक्ष फलदायिनी ।
प्राप्त हो श्री जिनेश आप शिवकामिनी ।
आपके पथ चलूं आपसा फल लहूं ।
आप गुणगान कर मोक्ष का थल चहूं ।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

है अमोल आतमा है अमोल आप पद ।
विश्व की उपाधियां आप सम है अपद ।
एक ओर सर्व जग एक ओर आप हैं ।
अर्घ्य कर ले प्रभो आप नाम जाप है ।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(छंद धत्तानंद)

तीर्थंकर वंदें नित अभिनंदें, पद अरविंदे शीश धरें ।
पांचों कल्याणक समकित दायक, मोद बधायक भक्ति करें ।

पुष्पांजलि क्षिपेत्।

(छंद गीतिका)

रत्न नभ से बरसते थे माह छह जब पूर्व से ।
रे ! कृष्ण सावन दूज माता-उर मुनिसुव्रत बसे ।
स्वप्न सोलह फल मधुर सुन मोद मन में छा गई ।
छप्पन कुमारी अष्ट देवी हेतु सेवा आ गई ।

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णद्वितीयायां गर्भमंगलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्ति सब जग में हुई कंपित हरि आसन हुआ ।
वैशाख वदी दशमी दिवस को जन्म जगभूषण हुआ ।
इन्द्र शचि सुर मेरु पर ला अभिषेक पांडुक पर किया ।
तब नृत्य तांडव सहस लोचन देख सब हरषे हिया ।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णदशम्यां जन्ममंगलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशमी दिवस वैशाख वदी वैराग्य ले शिव साधने ।
वे वन चले प्रासाद वैभव छोड़ निज आराधने ।
इन्द्र सुर ब्रह्मर्षि आए मनुज भी अनुमोदने ।
रे ! सिद्ध को कर नमन मुनिव्रत ले लगे निज शोधने ।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णदशम्यां तपोमंगलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय-अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कैवल्य पायो कृष्ण नवमी वैशाख के पावन दिवस ।
कर नष्ट चारों घातिया पाया अनन्ती आत्मरस ।
भवि भाग्य से द्वादश सभा में पीयूष पावन था झरा ।
तब साध निज को भव्य ने शिवमार्ग सुंदर था वरा ।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णनवम्यां ज्ञानमंगलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब कर्म योग संयोग तज नि:शेष केवल आत्म हो ।
पर्याय भी ध्रुव अचल अनुपम निकल हो परमात्म हो ।
फागुन वदी बारस दिवस सम्मेद की पावन धरा ।
रे ! कूट निर्जर शिखर से तुम शिखर आतम पद वरा ।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णद्वादश्यां मोक्षमंगलमण्डिताय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

मुनिसुव्रत मुनिनाथ का, करता हूं गुणगान ।
जिस पथ आप चले प्रभु, पाऊं पंथ महान ।

(छंद पद्धरि)

जय मुनिसुव्रत जिनवर महान, जय वीतराग गुणगण निधान ।
जय सर्व जगत ज्ञाता जिनेश, जय निज आतम ध्याता गुणेश ।
जय हितकर हो करुणानिधान, बिन कारण बिन करुणा सुजान ।
जय दिव्यध्वनि दातार देव, बिन इच्छा जो खिरती स्वमेव ।

जग के सब तत्त्व पदार्थ कहे, स्वाधीन सभी तत्त्वार्थ रहे ।
सुन्दरतम तुम जग को कहते, सब निज निज में ही नित रहते ।
एकत्व नियत को प्राप्त समय, सुन्दर सर्वत्र अरे गुणमय ।
इक दूजे की जो बन्ध कथा, वह है विरोधिनी कही यथा ।

प्रभु समय सभी छह द्रव्य कहे, निज निज में शोभा प्राप्त रहे ।
अपने अनन्त धरम चुम्बन, पर से ना स्पर्श अरे इक क्षण ।
इक क्षेत्र भले अवगाह रहे, निज से ना च्युत हो देव कहे ।
परिणमन नही पर रुप करे, ना नष्ट व्यक्तिता नन्त अरे ।

यों द्रव्य रहे निज-निज प्रदेश, पर में ना हो किंचित प्रवेश ।
अस्ति निज से नास्ति पर से, सब वज्र दिवारों मध्य बसे ।
जिनशासन का यह मूलमंत्र, कण-कण जग में हैं सब स्वतन्त्र ।
वस्तु स्वतन्त्र्य का दिव्य नाद, प्रभु तुम वाणी सत्यार्थ वाद ।

कर दिव्य देशना हे जिनेश, हर भविजन के भवभ्रमण क्लेश ।
सम्मेद अचल से अचल गति, निर्जर से मोक्ष महान यति ।
तज तन चेतन प्रतिच्छंद बने, सब कर्म तजे सुखकंद बने ।
साधक को साध्य दशा दिखती, तुमको लख परिणति निज लखती ।

(छंद धत्तानंद)

तीर्थंकर प्रभुवर हितकर दुखहर, भवतर शिवकर सुहित विभो ।
तुमको नित ध्यावें तुम गुण गावें, शिवसुख पावें शीघ्र प्रभो ।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय-अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

मुनिसुव्रत बतला रहे, निजाधीन निजरुप ।
तुम पद का अनुसरण करुँ, पाऊं सिद्ध स्वरुप ।

पुष्पांजलि क्षिपेत्।